**देश का जूनून**

ज़हन में सवार है देश भक्ति का जूनून

माँ की रक्षा के लिए उबल रहा है हर कतरा और खून

चाहे देश रक्षा कार्य कितना भी हो संगीन

माँ के लिए मिट जायेंगे और रखेंगे इसे सदियों रंगीन

आँखे नॊच लेंगे अगर बुरी नज़र पड़ी किसीकी हमारी धरती माँ पे

मिटा देंगे उसका नामों निशाँ सारे जहाँ की किताब से

हमारी चुप्पी को कमजोरी समझने की ना कर भूल

वरना फिरता रह जायेगा जंगल में जैसे की जानवर और मकबूल

मौके तो हमने बहुत दिए ताकि समझकर सुधार ले तू अपनी भूल

लेकिन तुझमे तो खून सवार था चोरी का , ना देखा की हमारे हाथ है वीर्यता का त्रिशूल

साफ़ पानी को भी गनद करदे ऐसा है तेरा वतन और खून

नहीं सुधर सकता तू कभी बेवकूफ , क्यूंकि तू तो शुरू से ही है नामाकूल

सोच तो बहुत गन्दी पाल राखी है तूने अपने इस जहन में होकर मशगूल

लेकिन हमारे पास तो हर जोड़ का तोड़ है क्यूँ की हम है तेरे बाप ना की चमेली का फूल

बात करता है तू गोलीबारी की

औकाद नहीं तेरी रद्दी बाज़ार में भी चार आने की

दिखता तो यूँ है की सबसे है साधारण

लेकिन तेरी हर गन्दी करतूत का हमारे पास है निवारण

इतिहास गवाह है नहीं बख्श हमने किसी दरिन्दे को

अगर पसंद ना आया कोई , हमारे यहाँ परिंदों को

दिया है जवाब ईट का पठार से हमने तुझको

गलती ना करना दुबारा बैमान नहीं तो पछतायेगा बरसों

इज्जत तो ना थी तेरी कभी , ना कभी हो पायेगी

जान बचा सकता है तो बचा ले , हमारी दी हुई ज़िन्दगी ही तेरे काम आएगी

कूटनीति तो तेरे अंग अंग में भरी है जो कभी जा नहीं सकती

गलतिय ऐसी करता है तू जो तेरी माँ भी तुझे बता नहीं सकती

पैरो पे आके गिर जाता है , जब होता है तुझे डर जान का

हम माफ़ भी कर देते है तुझे क्यूंकि हमारा दिल है इंसान का

पाक ना कभी तू समझ पाया अपने आप को ना मतलब हमारे नाम का

खाख में मिला देंगे तुझे अगर अब सुर भी उठाया लेकर नाम इन्तेकाम का

नज़र उठाने की कोशिश भी अगर तू करेगा

हम वार ऐसा करेंगे की तू आशू के घुट भी पिएगा

आते है तुम्हारे लोग यहाँ सरन लेने हमारे पास

हम भिक में दे भी देते जगह जानकार भी तेरे मनन की खटास

किशोर पाठक